निरक्षर से प्रेरक तक का सफर

मनोहर लाल आर्य

उसका जन्म एक मामूली खेतिहर परिवार में हुआ था। पुराने ख्यालों के माता-पिता ने उसे तीसरी कक्षा के बाद स्कूल नहीं भेजा। तेरह वर्ष की आयु में उसका ब्याह कर दिया गया। ससुराल में बिल्कुल ही शिक्षा का वातावरण नहीं था। कृष्णा पहले का पढ़ा-लिखा भी भूलने लगी। मगर उसे इसकी कमी बहुत सालती रही।

इसी बीच सन् 1983 में गांव छापुर की ढाणी में प्रौढ़ शिक्षा केंद्र शुरू हुआ। गांव की सभी महिलाएं निरक्षर थीं। विद्यालय के अध्यापक की पुत्री को केंद्र के संचालन का काम सौंपा गया। कृष्णा यादव को तेरह बरस बाद स्कूल जाने में संकोच तो बहुत हो रहा था, पर पढ़ने की तेज़ इच्छा ने विजय पाई।

कृष्णा को पढ़ने का शौक इतना था कि खाली समय में भी वह पुस्तकें पढ़ती, पत्र लिखती। उसकी लगन और मेहनत का यह फल हुआ कि एक ही साल में उसने बहुत कुछ सीख लिया।

सन् 1984 में उन्हें केंद्र के अनुदेशक का काम सौंप दिया गया। इस नई जिम्मेदारी को कृष्णा ने बखूबी निभाया। अपने मधुर व्यवहार और लगन से वह गांव की स्त्रियों में लोकप्रिय हो गई। ऐसा जादू किया कि महिलाएं केंद्र शुरू होने का इंतजार करतीं।

कृष्णा की कोशिशों से आज ढाणी की सौ फी सदी महिलाएं साक्षर हैं। उसे आदर्श अध्यापक माना जाता है। कृष्णा खुद भी बराबर पढ़ती रहती हैं। 1986 में उन्होंने राजकीय माध्यमिक विद्यालय से आठवीं कक्षा पास की।

1988 में कृष्णा यादव की सक्रिय सहभागिता और नेतृत्व को देखते हुए उन्हें जन-शिक्षण निलियम का प्रेरक बनाया गया। यह निलियम इनके गांव में ही खोला गया।

साक्षरता कार्यक्रम के अलावा वह दूसरे राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे परिवार-कल्याण, अल्प बचत और पेड़ लगाने आदि में भी योगदान देती रही हैं। उन्हें अच्छा काम करने के कारण ज़िला कलक्टर अलवर से प्रशंसा-पत्र भी मिला है।

—'अनौपचारिका' से साभार